

## ॥ अन्नपूर्णास्तोत्रम् ॥

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी  
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।  
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी  
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्-वक्षोजकुम्भान्तरी।  
काश्मीरागरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी  
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी।  
सर्वैश्वर्यकरी तपःफलकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ३ ॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी  
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी।  
मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी  
लीलानाटकसूत्रखेलनकरी विज्ञानदीपाङ्करी।  
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ५ ॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी  
काश्मीरा त्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी।  
स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥

उर्वी सर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी  
वेणीनीलसमानकुन्तलधरी नित्यानन्दानेश्वरी।  
साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ७ ॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी  
 वामे स्वादुपयोधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।  
 भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णाेश्वरी ॥ ८ ॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरी  
 चन्द्रार्कान्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी।  
 मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णाेश्वरी ॥ ९ ॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी  
 सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।  
 दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी  
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णाेश्वरी ॥ १० ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।  
 ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।  
 बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ  
 श्री-अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:  
[http://stotrasamhita.net/wiki/Annapurna\\_Stotram](http://stotrasamhita.net/wiki/Annapurna_Stotram).

generated on February 1, 2025

Downloaded from <http://stotrasamhita.github.io> | [StotraSamhita](http://StotraSamhita) | Credits